

UGC Care Journal

ISSN : 0974-0053

सम्पादक

यशदेव शल्य - मुकुंद लाठ

उन्मीलन

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal)

संपादक

अंबिकादत्त शर्मा

दर्शन प्रतिष्ठान

जयपुर

Vol. 27, Issue-07
(October, 2020)



- सिक्का बदल गया : कृष्णा सोबती 31-33
राज कुमार मौर्य
- शिशुपालवधम् में वीररस विवेचन 34-37
डॉ० निलेश कुमार
- उड़ीसा की नवपाषाणिक मृदभाण्ड परम्परायें 38-41
दिव्या सिंह
- प्रगतिशील आंदोलन और सामाजिक यथार्थ 42-44
डॉ. सत्य प्रकाश चतुर्वेदी
- द्विवेदी-युग की हिन्दी पत्रकारिता (1900-1920) 45-48
डॉ. टीकम चंद मीना
- साहित्य और राजसत्ता 49-53
डॉ० वीना सुमन
- ✓ • हिन्दी कहानी में आधुनिकतावाद का भावबोध 54-60
डॉ. राजेन्द्र यादव
- राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में लोक संस्कृति 61-63
राहुल राज
- वर्तमान परिदृश्य में भारत की आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां : 64-68
समस्या एवं समाधान
डॉ रितेश कुमार चौरसिया
- चामुण्डा प्रतिमा में प्रतिबिम्बित आध्यात्मिकता - एक 69-77
अध्ययन
प्रो० प्रभात कुमार
कल्पना देवी

हिन्दी कहानी में आधुनिकतावाद का भावबोध

डॉ. राजेन्द्र यादव

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश - 470003

शोध सारांश :

हिन्दी कहानी में आधुनिकता का भावबोध अनेक कहानीकारों में दिखाई देता है। आधुनिकता वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पृक्त एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो समकालीन परिप्रेक्ष्य में उपजी हुई नयी संवेदनाओं, नई स्थितियों, विचार भूमियों और जीवन संदर्भों को व्यक्त करती हुई है, जिनमें प्रमुख रूप से अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, रघुवीर सहाय, फणीश्वरनाथ 'रेणु' और निर्मल वर्मा की कहानियों में आधुनिकता का भावबोध दिखाई देता है। इन कहानियों में आधुनिकता का जो भावबोध हमें दिखाई देता है वह रचनाशीलता की विशेषता को प्रकट करता है। क्योंकि साहित्य एवं कला में आधुनिक मानव की सृजनशीलता ही आधुनिकता के रूप में प्रकट होती है। साहित्य में आधुनिकता का अर्थ आधुनिक जीवन की समस्याओं और वास्तविकता से है।

शब्द कुंजी/कीवर्ड : कहानी, अभिव्यक्ति, आधुनिकतावाद, साहित्य, समाज, मनुष्य भावबोध औद्योगीकरण, प्रौद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण

प्रस्तावना :

हिन्दी कहानी में आधुनिकतावाद का आरम्भ चौथे दशक के अंतिम वर्ष से माना जाता है। हिन्दी कहानी में आधुनिकता का भावबोध कई रूपों में देखा जा सकता है। प्रेमचंद और प्रसाद के बाद हिन्दी कहानी में क्रमशः जो परिवर्तन घटित होता दिखता है उसका कारण यथार्थ का परिवर्तन होना है और यह परिवर्तन सामाजिक विकास की भूमण्डलीकरण प्रक्रिया के तहत औद्योगीकरण, प्रौद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण और विज्ञान की प्रगति के कारण घटित हुआ था, जिसके कारण पारम्परिक सामाजिक संस्कृति की जगह आधुनिक सामाजिक संस्कृति का निर्माण सम्भव हुआ। फलस्वरूप परम्परागत मूल्यों, विचारों और धारणाओं की जगह आधुनिक मूल्यों, विचारों और धारणाओं का विकास हुआ। लेकिन इस नवनिर्मित आधुनिक औद्योगिक और उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानव के लिए अनेक समस्याएँ पैदा की, जिसकी अभिव्यक्ति आधुनिकतावादी साहित्य में हुई। यथार्थ चूँकि परिवर्तनशील होता है, इसलिए यथार्थ के परिवर्तन के साथ मानवीय सम्बन्धों में भी परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन दिन-प्रतिदिन जटिल होता जाता है। कहानीकार राजेन्द्र यादव का मानना है कि, "आधुनिकता मेरी समझ में एक ऐसी दृष्टि है, जो धीरे-धीरे आपकी उन पुराने, मूल्यों धाराओं से मुक्त होने की दिशा में प्रेरित करती है। जो प्रश्न आपके भीतर उठते हैं, उससे ही आप आधुनिकता का एक तरह से अनुमान लगा सकते हैं, आधुनिकता को समझ सकते हैं।"¹

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के संदर्भ डॉ. नरेन्द्र मोहन का अभिमत है कि, "साहित्य के संदर्भ में आधुनिकता पहल से सजी-सँवरी और तराशी हुई कोई मुकम्मल चीज नहीं है, जिसे लेखक रचना में रखता हो। यह उसकी रचना-दृष्टि और रचना-प्रक्रिया में घुली-मिली रहती है। वह इस रचना के दौरान उपलब्ध करता है।... जिन्दगी के वास्तविक संदर्भों की सामाजिक और ऐतिहासिक शक्तियों और प्रक्रियाओं की उसे जितनी गहरी समझ और पहचान होगी, उसका आधुनिक बोध उतना ही खरा और प्रासंगिक होगा"² आज के जीवन या यथार्थ से हमारा तात्पर्य हमारा सम्बन्ध जटिल हो गया है। यह कहने के बहुत मायने लगाये गये हैं और कोई माने न लगाकर तथ्य के रूप में इसे प्रस्तुत किया गया है। जटिलता के कारण लक्षण माने गये और रोज बदलता हुआ औद्योगिक दृश्य, तेज गति, टूटती हुई लय, खंडित होते हुए मूल्य, खुलते हुए नये आयाम आदि। इनमें से कुछ तो हर व्यक्ति सीधे अनुभव से महसूस कर सकता है और कुछ के लिए शायद कवि होना जरूरी है। ऐसे जटिल सामाजिक संरचना में रचना की प्रकृति भी निश्चय